Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, General Impact Factor : 2.3982, Volume 07, No. 04, October, 2017, pp. 329-332

डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन् और जगदगुरु आदि शंकराचार्य के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 मीनाक्षी शर्मा*
ममता रानी**

प्रस्तावना

शिक्षा के महत्व से आज सम्पूर्ण विश्व परिचित है। देश के जन–जन में शिक्षा का प्रचार–प्रसार है। शिक्षा मानव जीवन की आधारशिला है, जो मानव व्यक्तित्व का विकास कर उसे उत्तम जीवन जीने की कला सिखाती है। शिक्षा वास्तव में एक प्रकिया है जिसके द्वारा एक मानव की छिपी हुई शक्तियों को विकसित किया जाता है। उसे नये ज्ञान, कुशलताओं, मूल्यों, आदर्शों आदि को सिखाया जाता है, जिससे कि वह वातावरण के साथ समायोजन कर सके। समाज में सही स्थान प्राप्त कर अपने मानव जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त कर सके। इसके लिए विश्व का प्रत्येक राष्ट्र ही प्रयत्नशील है, सभी राष्ट्र इस दिशा में बडे व्यापक प्रयास कर सकारात्मक परिणाम प्राप्त किये हैं।

विभिन्न कालों और देशों में विभिन्न दार्शनिकों, शिक्षाविदों, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक व्यक्तियों ने शिक्षा के उद्देश्यों और कार्यों के बारे में अपने अपने विचार अभिव्यक्त किये हैं। वैदिक काल में शिक्षा का उद्देश्य बालक को मूल रुप से अध्यात्मिक ज्ञान तथा मोझ की प्राप्ति कराना एवं मानव को मुक्ति दिलवाना था। उपनिषद् के अनुसार ''सा विद्या या विमुक्तये''। अर्थात शिक्षा वह है जो मुक्ति प्रदान करवाये।

शिक्षा के द्वारा छात्रों में चरित्र, विनय, संयम, समाजसेवा, देशप्रेम, स्वाबलम्बन, अहिंसा आदि गुणों का विकास किया जाना चाहिए। इन सभी गुणों का विकास शिक्षा द्वारा किया जाता है, शिक्षक को छात्रों सम्मुख एक आदर्श शिक्षा प्रस्तुत करनी चाहिए उसी के अनुरुप एक आदर्श शिक्षक में बहुत से गुण समाहित होते हैं।

इस विषय में डा0 राधाकृष्णन ने कहा है कि ''शिक्षा वह प्रकिया है जिससे हम अपनी संस्कृति के अमूल तत्वों को बनाये रखते हैं और बेकार के तत्वों को निकाल फैंकते हैं। यह स्थायी प्रभाव और परिवर्तन का अभिकर्ता दोनों ही होती हैं।'' ''शिक्षा का उद्देश्य न तो राष्ट्रीय जीनव में कुशलता लाना है न विश्व एकता करना है, बल्कि व्यक्ति को यह अनुभूति करवाना है कि बौधिकता की अपेक्षा कुछ ऐसी गहरी वस्तु है जिसे आप चाहे तो आध्यात्मिक कर सकते हैं।'' ''शिक्षक का कार्य अत्यन्त महत्व का है उसे एक निष्ठावान व्यक्ति होना चाहिए। उसे मानव के भविष्य, इस देश के भविष्य और विश्व के भविष्य में विश्वास होना चाहिए।'' डा0 राधाकृष्णन् ने संस्कृत में एक स्लोकः–

''आचार्यति पादमध्योति् शिष्या पादम स्वमध्या।
पादम च ब्रहमचास्यि पादम कालम कमेणतु।''

को उद्घृत किया है जिसके अनुसार हम अपने शिक्षक से सीखते हैं, स्वंय से सीखते हैं, दूसरो से सीखते हैं और अपने जीवन के अनुभवों से सीखते हैं। शिक्षा सदा औपचारिक नहीं होती। अतः अनुभव एक महान शिक्षक है।

जगदगुरु आदि शंकराचार्य ने समस्त देशों में घूम कर समाज में ज्ञान का प्रचार व प्रसार किया था। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण योगदान दिया, उनका अद्वैतवाद मानव जीवन तथा वर्तमान शिक्षा प्रणाली का आदर्श है। जगदगुरु आदि शंकराचार्य के अनुसार, **''शिक्षा आत्मानुभूति है।''** अर्थात शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बालक

* शोध पर्यवेक्षक, मेरठ कॉलेज, मेरठ, उत्तर प्रदेश।
** ''शोधार्थी, मेवाड विश्वविद्यालय, चित्तौड़गढ़, राजस्थान।

को आत्मा की अनुभूति कराये। शिक्षा का कार्य बालक को मुक्ति तथा आध्यात्मिक चेतना का बोध कराना होता है। **''शिक्षा को मुक्ति या हमारी आध्यात्मिक चेतना को लेने जाना होता है।''**

जगदगुरु आदि शंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित अद्वैत वेदान्त के अनुसार, **''अच्छा शिक्षक वही होता है जो छात्र को ब्रहम के तत्वों के गूढ रहस्य को समझाये। इसके लिए शिक्षक की स्वंय भी अज्ञान से मुक्ति होना आवश्यक है।''**

अध्ययन के उद्देश्यः–

1. डा0 राधाकृष्णन व जगदगुरु आदि शंकराचार्य के जीवनवृत व कार्यो का संक्षेप में अध्ययन करना।
2. डा0 राधाकृष्णन व जगदगुरु आदि शंकराचार्य के द्वारा निरुपित दर्शन के आधारभूत सिद्वान्तों का अध्ययन करना।
3. डा0 राधाकृष्णन व जगदगुरु आदि शंकराचार्य के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
4. डा0 राधाकृष्णन व जगदगुरु आदि शंकराचार्य द्वारा निरुपित शिक्षण विद्ययॉ, अनुशासन, छात्र–शिक्षक सम्बन्ध, पाठ्यक्रम, विद्यालय का आधूनिक परिपेक्ष्य में अध्ययन करना।
5. डा0 राधाकृष्णन व जगदगुरु आदि शंकराचार्य के शैक्षिक विचारों, निरुपित शिक्षण विधियॉ, अनुशासन, छात्र–शिक्षक सम्बन्ध, पाठ्यक्रम, विद्यालय का तुलनात्मक अध्ययन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में करना।

शिक्षा का अर्थ

डा0 राधाकृष्णन शिक्षा को व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौधिक एवं आत्मिक विकास की प्रक्रिया मानते हैं तथा शिक्षा को ऐसा साधन मानते हैं जो व्यक्ति व समाज को प्रगति देता है व विकास को गति प्रदान करता है। ये लोकराज्य स्थापित करने हेतु कर्तव्य एवं नागरिकता की भावना से ओतप्रोत कुशल जीवन यापन करने की चरित्रवान क्षमता, सम्पन्न, शिष्ट एवं स्वावलम्बी नागरिक तैयार करना चाहते थे जिसमें कि आदर्श जीवनयापन करने की सामर्थ्य हो, जो मानवता के विकास के लिए अपनी अमूल्य से अमूल्य निधि त्यागने को तैयार रहते हों। इन्होने शिक्षा का महत्वपूर्ण आधार आध्यात्मवाद को माना। आदि शंकराचार्य के अनुसार मनुष्य जीवन का अन्तिम उद्देश्य मुक्ति है और इस मुक्ति के लिए उन्होने ज्ञान मार्ग का समर्थन किया है। उनकी दृकष्ट में जब मनुष्य को यह ज्ञान हो जाता है कि ब्रहम सत्य है शेष सब असत्य है, तभी वह सांस्कृतिक मोह माया से मुक्त होता है। उनकी दृष्टि में शिक्षा वह है जो मुक्ति दिलाये **(सा विद्या या विमुक्तये)**। शिक्षा के विषय में उन्होने उपनिषदीय विचार का समर्थन किया हैं शंकराचार्य के अनुसार **''शिक्षा का तात्पर्य बालक व जिज्ञासु की अज्ञानता व अविद्या को दूरकर सच्चा ज्ञान प्रदान करने वाली उस मानसिक क्रिया से है जो उसे मुक्ति के लिए तैयार करें।''**

शिक्षा का उद्देश्य

डा0 राधाकृष्णन् ने शिक्षा के उद्देश्य बालक की अर्न्तनिहित योग्यताओं को अभिव्यक्ति, संकल्प षक्ति का विकास, चरित्र निमार्ण, धार्मिकता, नेत्रृत्व क्षमता का विकास, लोकतंत्र का संरक्षण एवं विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास बताये हैं। इसके साथ ही उन्होने अन्तः प्रज्ञयात्मक ज्ञान की प्राप्ति को मुख्य माना है व इन्होने ज्ञान के तीन स्तर बताये हैं– 1. प्रत्यक्षात्मक ज्ञान 2. प्रत्यात्मक ज्ञान 3. अंतः प्रज्ञात्मक ज्ञान। इन तीनो प्रकार के ज्ञान प्राप्ति का साधन क्रमशः इन्द्रिय, बुद्वि एवं आत्मा है। किन्तु शिक्षा का लक्ष्य व्यक्ति को अन्तः प्रज्ञात्मक ज्ञान के स्तर तक पहुॅचाना है। क्योकि इसी से वास्तविक शान्ति मिलेगी व बालक पूर्णता को प्राप्त होगा। डा0 राधाकृष्णन् सदैव इस बात पर बल देते रहे कि हमें अपनी नैतिक व आध्यात्मिक शक्ति बढानी है, क्योंकि भौतिक तृष्णा पर विजय पाने के लिए यही एक अमोध शक्ति है। डा0 राधाकृष्णन् शिक्षा के उद्देश्यों को मानव जीवन के उद्देश्यों के साथ जोड सकने में सफल रहे। उन्होने बताया कि वास्तिविक शिक्षा वह है जो मस्तिष्क को उन्मुक्त करे, चरित्र का विकास करे, मुक्ति दे और विश्वबन्धुत्व की ओर ले जाए। शंकराचार्य ने शिक्षा का उद्देश्य ब्रहम साक्षात्कार बताया हैं अध्त्रात्मोपनिषद (63) में कहा गया हैः–

''एक मेवा द्वितीयं नेह नानास्ति किंचन''

अर्थात ''एक विश्व में एक ही सत्ता है, अनेक की सत्ता नहीं''।

ब्रह्म तत्व ही वास्विक तत्व है। जीव व ब्रह्म में अन्तर नहीं है। जीव सर्वज्ञ, सर्वव्यापी व सर्व शक्तिमान है। अज्ञानता, अविद्या के कारण हम उस सर्वज्ञ सत्ता को पहचान नहीं पाते। ब्रह्म को जानने से मनुष्य ब्रह्ममय हो जाता है। जीव व ब्रह्म के एक हो जाने के बाद मुक्ति प्राप्त होती है एवं इसे प्राप्त करने पर मनुष्य कह बैठता है– **''अहं ब्रहमस्मि।'' अर्थात मैं ब्रह्म हूॅ।** तभी उसे आम्त साक्षात्कार प्राप्त होता है। आत्म तत्व के दर्शन के लिए वृहदारण्य (4–5–6) में कहा गया हैः–

''आत्मा व अरे दृष्टव्य श्रोतव्यों, मन्तव्यों निदिध्यासितव्य।'' अर्थात् इस आत्मा को देखना चाहिए, इस पर मनन करना चाहिए तथा निदिध्यासन द्वारा उसका साक्षात्कार करना चाहिए।'' शिक्षा का यही परम लक्ष्य है।

पाठ्यक्रम

एक शिक्षक होने के नाते डॉ0 राधाकृष्णन ने भारत की शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त कमियों की बड़े करीब से देखा था। वह जीवन के उद्देश्यों का शिक्षा के साथ जोड़ते हुए ऐसे पाठ्यक्रम की कल्पना करते है। जो बालक का सर्वागीण विकास कर सके। उसे नैतिक आर्दश चरित्र का स्वामी बना सके। भारत के सामाजिक, अर्थिक आवश्यकताओं के अनुरुप पाठ्यक्रम में उन्होने निम्नलिखित विषयों को समाहित किये जाने का समर्थन किया–भाषा के लिए उन्होने राष्ट्रभाषा हिन्दी, मात्रभाषा एवं प्रादेशिक भाषा के साथ संस्कृत का समावेश किया है। ककला एएवं विज्ञान के विषय में इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, नितिशास्त्र, साहित्य विज्ञान, मणित माव व सामान्य विज्ञान, राजनिति और दर्शन जैसे विषयों को स्थान दिया। नैतिक व धार्मिक शिाक्षा के लिए धार्मिक व्यक्तियों की जीवनी, धार्मिक ग्रन्थ, धर्म दर्शन एवं नैतिक शिक्षा को महत्वपूर्ण माना है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत को व्यावसायिक एवं वैज्ञानिक समृद्धि प्राप्त करने के लिए उन्होने पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक, व्यावसायिक और औधौगिक विषयों में सम्मलित करने पर जोर दिया है।

शंकराचार्य के अनुसार शिक्षा दो प्रकार की होती है। आध्यात्मिक शिक्षा और भौतिक शिक्षा अर्थात परा विद्या व अपरा विद्या। आध्यात्मिक अर्थात परा शिक्षा परमात्मा के सम्बन्ध में ज्ञान देती है। इस प्रकार की शिक्षा से व्यक्ति ब्रह्म और आत्मा की एकता को समझ सके, अपरा विद्याा व्यक्ति को सांसारिक सुख प्राप्त कराने के लिए प्रेरित करती है और वह इन्द्रियभोग का आनन्द लेने का प्रयत्न करता है। इन दोनो प्रकार की शिक्षा के आधार पर शंकराचार्य ने पाठयचर्या को दो भागों में विभाजित किया है–व्यवहारिक ज्ञान जिसमें उन्होंने भाषा, चिकित्सा शास्त्र, गणित, आसन, व्यायाम एवं ब्रह्मचर्य जैसे विषयों का समावेश किया है। एवं दूसरा पाठ्यक्रम पारमार्थिक विषय जिनमें उन्होने साहित्य, धर्म, दर्शन, यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार धारण, ध्यान एवं समाधि जैसे विषयों व क्रियाओं का समावेश किया है। शंकराचार्य की दृष्टि से वर्ण भेद भी कर्म जनित है। वे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र के अलग–2 कर्मो में विश्वास रखते थे और उन्होने अपने कार्यो का कुशलतापूर्वक सम्पादन करने हेतु अलग–2 पाठ्यचर्या का विधान करने के पक्ष में थे। परन्तु परा शिक्षा के लिए सबको समान ज्ञान एवं समान क्रियाऐं करने पर बल देते थे।

शिक्षण विधियाँ

डॉ0 राधाकृष्णन् ने मानव प्रकृति के अनुसार बालक बालिकाओं को मुख्यतः तीन भागों के विभक्त किया– 1. ज्ञान प्रधान प्रकृति युक्त 2. भावना प्रधान प्रकृतियुक्त 3. कार्य प्रधान प्रकृतियुक्त। उनका मानना था कि ज्ञान प्रधान प्रकृति वाले विद्यार्थियों को परम्परागत शिक्षण पद्धतियों जैसे – श्रवण, मनन, निदिध्यासन के द्वारा शिक्षा दी जानी चाहिए। भावना प्रधान प्रकृति के विद्यार्थियों के लिए उन्होनेसाहित्य एवं ललित कलाओं इत्यादि के माध्यम से उल्लेखित कर सिखाये जाने का समर्थन किया। इसी प्रकार कार्य प्रधान प्रकृति के विद्यार्थियों को उन्होने क्रिया विधि द्वारा सिखये जाने की बात कही है। उनका विचार है कि शिक्षा केवल पुस्तकिय ज्ञान प्राप्त करना और परिक्षा में उत्तीर्ण होना ही नहीं है बल्कि मस्तिष्क की शक्तियों का विकास, प्रशिक्षित एवं अनुशासित करना तथा बालक को वास्तिविक रुप में आध्यात्मिक विकास करना है। अतः शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शिक्षण संस्थानों में आध्यात्मिक शिक्षा के प्रचलन की आवश्यकता है। जिन मनुष्यों में त्यागशीलता निस्वार्थ सेवा भावना एवं परमात्मा में आस्था होती है उन्हे समाज की प्रगति पथ पर अग्रसारित करने हेतु संलग्नशील होने की आवश्यकता है।

शंकराचार्य ने ज्ञान और ज्ञान प्राप्ति के सम्बन्ध में विस्तृत रुप से बताया हैः–

1. ज्ञान प्राप्त करने के उपकरण (क) बाह्य उपकरण, (ख) आन्तरिक उपकरण। बाह्य उपकरणों में ज्ञानेन्द्रियॉ व कर्मेन्द्रियॉ आती है। और आन्तिरिक उपकरणें में मन, बृद्धि, अहंकार और चित्त आते है। इन्द्रियां किसी बस्तु के प्रति तभी क्रियाशील होती है जब मन तथा बस्तु के बीच संयोजन करता है। बुद्धि इसमें कांट–छांटकर उसे अहं से जोड़ती है और अहं से ज्ञान चित्त पर अंकित होता है और चित्त से आत्मा को प्राप्त होता है।

2. **ज्ञान प्राप्त होने के स्रोत**–शंकराचार्य ने ज्ञान प्राप्त करने के चार स्रोत बतायें हैं। 1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. शब्द और 4. तर्क इन्द्रिय प्रत्यक्ष को तब तक स्वीकार नहीं करते जब तक आत्मा द्वारा प्रत्यक्ष नहीं हो जाता। अनुमान में ये पूर्व अनुभवों के आधार पर नये अनुभवों को तर्क द्वारा स्वीकार करने की बात करते है, शरब्द के रुप में ये निगम (वेद) और आगम (तंत्र) ग्रंथों को श्रेष्ठ मानते है। तर्क का अर्थ है बोद्धिक कसौटी। अतः जब तक इन्द्रिय प्रत्यक्ष

अनुमान और शब्द द्वारा प्राप्त ज्ञान बौद्धिक तर्क की कसौटी पर नहीं कसा जाता तब तक उसके बारे में सत्य असत्य होना प्रमाणित नहीं हो सकता। 3–ज्ञान प्राप्ति के सोपान–शंकराचार्य ने ज्ञान प्राप्ति के तीन सोपान बताये है– श्रवण, मनन, और निदिध्यासन।श्रवण में वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद एवं गीता आदि ग्रन्थों का गुरुमुख द्वारा श्रवण एवं अनका स्वाध्याय। मनन में श्रवण अथवा अध्ययन द्वारा प्राप्त ज्ञान पर चिन्तन और निदिध्यासन में प्राप्त ज्ञान का नित्य चिन्तन एवं प्रयोग। वे श्रवण अथवा अध्ययन के पश्चात प्राप्त ज्ञान पर विद्वानों के साथ बाद–विवाद को अच्छा मानते थे। इसी के साथ प्रश्नोत्तर विधि, व्याख्या विधि, दृष्टान्त विधि और उपदेश विधि को भी महत्वपूर्ण मानते थे।

उपसंहार

आधुनिक शिक्षा प्रायः बोद्धिक या मानसिक शक्ति के विकास पद अधिक बल देती है। इसका सम्बन्ध भौतिक समृद्धि से अधिक है, आध्यात्मिक विकास पर कम। हम यह भूल जाते है कि भौतिकता पर विजय प्राप्त करने के लिए आध्यात्मिकता का विसा आवश्यक है। असके लिए हमें प्राचीन भारतीय दार्शनिक व शिक्षाशास्त्रों के द्वारा प्रतिपादित विचारों, सिद्धांतों को शिक्षा का आधार मानकर उनके द्वारा बतलाये मार्ग को अपनाना चाहिए।

डॉ0 राधाकृष्णन् तथा जगद्गुरु आदि शंकराचार्य शिक्षा को पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करने या मात्र परिक्षा पास करने का साधन नहीं मानते। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य आन्तरिक शक्तियों को विकसित, प्रशिक्षित तथा अनुशासित करने के साथ–साथ उसे कृतिम जीवन जीने की अपेक्षा प्रकृति के निकट सम्पर्क स्थापित करना सिखाया है और आध्यात्मिक प्रकृति काविकास कर उसमें लोक कल्याण भावना है। त्याग, निस्वार्थ सेवा भाव तथा परमात्मा में आस्था रखने वाला व्यक्ति ही समाज तथा राष्ट्र का उत्थान कर सकता है।

आज उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसका समर्थन भारतीय दार्शनिकों और शिक्षा सुधारकों ने किया है। आधुनिक शिक्षा प्रणालीमें शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है। हमें डॉ0 राधाकृषणन् और जगद्गुरु आदि शंकराचार्य के द्वारा बताये गये मार्ग पर चलना ही होगा, इससे देश की शिक्षा का स्तर सुधर सकता है, जिससे अनुशासित, चरित्रवान, देशभक्ति, निर्भीक, आत्मनिर्भर तथा स्पष्ट विचारधारा रखने वाले नागरिकों का निर्माण किया जा सके। ऐसे नागरिकों का निर्माण किया जा सके। ऐसे नागरिक देश को निश्चित रुप से उप्पति के शिखर की ओर ले जाऐंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सक्सैना, एन0 आर0 स्वरुप शिक्षा के दार्शनिक व सामाजिक आधार–आर0 लाल बुक डिपो मेरठ।
2. पचौरी गिरीशचन्द्र– शिक्षा के सिद्धान्त–लायल बुक डिपो, मेरठ।
3. मित्तल, प्रो0 एम0 एल0–उदीयमान भारतीय समाज के शिक्षक– इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ।
4. दूबे, रमाकान्त– विश्व के कुछ महान शास्त्री–मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ।
5. लाल, रमन बिहारी–शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त–रस्तोगी पब्लिकेशन गंगोत्री शिवाजी रोड़ मेरठ।
6. पाण्डेय रामशक्ल–शिक्षा की दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय पृष्ठभूमि–विनोद प्रकाशन मन्दिर आगरा।
7. चौबे, एस0पी0–शिक्षा के दार्शनिक, ऐतिहासिक और समाजशास्त्रीय आधार–इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ।
8. जायसवाल सीताराम–विश्व के कुछ महान शिक्षक–न्यू बिल्डिंग अमीनाबाद प्रकाशन लखनऊ।
9. सफाया शैदा, शुक्ला–उदयीमान भारतीय समाज में शिक्षक–आर0 लाल बुक डिपो मेरठ।
10. गुप्त रामबाबू–महान पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा शास्त्री।
11. रुहेला एस0पी0–विकासेन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा–अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।
12. चौबे, डॉ0एस.पी., चौबे, डॉ0 अखिलेश, शिक्षा के दार्शनिक समाजशास्त्रीय आधार (2007) इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, पृष्ठ– 475–482।
13. गुप्ता, प्रो0आर0पी0, पाण्डे, डॉ0 रामशकल, पश्चात्य एवं भारतीय शिक्षाशास्त्री (2009–10) अग्रबाल पब्लिकेशन आगरा, पृष्ठ सं0– 176–200, 242–268।
14. लाल, प्रो0 रमन बिहारी, पलोड़, सुनीता शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय परिदृश्य (2016) आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ पृष्ठ सं0– 125–133।
15. श्री वास्तव, रश्मि, ''डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के शिक्षा चिन्तन की उपदेयता'' भारतीय आधुनिक शिक्षा, जनवरी 2010, एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 प्ैछ 0972–5636, पृष्ठ सं0– 36–44.

❑❑❑